SHRI M. C. CHAGLA: We try and help in the training of science teachers and try to supply them with equipment. I do not think any special aid is given to the schools who teach science as a part of their curriculum.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान यह बतलायेंगे कि यह जो विज्ञान की पढ़ाई करवाने की व्यवस्था की जा रही है छठी से आठवीं तक के लिए उनका कोर्स उनके समान ही होगा जो विज्ञान विषय लेकर पढ़ने वाले हैं या उनका अलग होगा।

SHRI M. C. CHAGLA: Our scheme is that science, not necessarily in a sophisticated form, should start from the earliest classes. A student should acquire a scientific aptitude. It is not necessary to have a laboratory in order to have a scientific mind. A student can observe the natural phenomena, can work in the farms where the plants grow. Then when he comes to higher standards, you have more sophisticated science. Our target is to start children from the very beginning. That is the only way we can build up a nation with a scientific outlook. That is what the U.S.S.R. did and succeeded beyond all expectations.

DR. SHRIMATI PHULRENU GUHA: May I know how many books on elementary general science have been produced and how many of them are translated into the different regional languages?

SHRI M. C. CHAGLA: We have started with secondary schools because there science is taught, and we have brought out a first class book on biology which has been sent to the States with a recommendation that it should be translated for use as text-book. Other text-books are under preparation.

TRANSLATION OF TEXT BOOKS BY THE CENTRAL HINDI DIRECTORATE

*469. PROF. SATYAVARATA SIDDHANTALANKAR: Will the Minister of EDUCATION be pleased to state the number of text-books which have so far been translated by the Central Hindi Directorate from English to Hindi and which of them have been accepted by Universities for being used as text or reference books for degree and post degree courses?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION (SHRI BHAKT DARSHAN): A statement is laid on the Table of the Sabha.

STATEMENT

Under the scheme for preparation, translation and publication of standard works at University level, which was earlier being implemented by the Central Hindi Directorate and now by the Standing Commission *for Scientific and Technical Terminology*, 376 titles have so far been taken up for translation into Hindi. Translation of 181 titles has been completed, of which 30 have been published and 36 are in the press. The remaining translated books are under vetting and will be sent to the press soon.

These books have been recently published and are being brought to the notice of all the Universities for adoption as text or reference books.

प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार : श्रीमन, यहां जो स्टेटमेंट रखा गया है उसके अनुसार 376 पुस्तकों का अनुवाद हो रहा है जिसमें से 181 पूरी हो गई हैं, 30 पुस्तकें छप चुकी हैं और 36 पुस्तकें प्रेस में हैं। इस योजना को चलते हुए कोई 4-5 साल हो गए हैं। प्रश्न यह है कि इतने अरसे के अन्दर इन सब पुस्तकों का अनुवाद क्यों नहीं हो सका। कुल 181 पुस्तकों का अनुवाद कर सके। इसका मतलब यह है कि 50 प्रतिशत का अनुवाद हुआ है। इनमें से कुल 30 ऐसी हैं जो छप चुकी हैं और ये 30 अभी आपने विश्वविद्यालयों को भेजी नहीं हैं। पता नहीं आगे परिणाम क्या होने वाला है। यह सारी की सारी देरी क्यों हो रही है—कोई एक संस्था तो अनुवाद कर नहीं रही, विभिन्न विश्वविद्यालयों को ये पुस्तकें आपने दे रखी हैं, हर विश्वविद्यालय ने अपने उपाध्यायों को ये पुस्तकें अनुवाद के लिए दी हुई हैं, फिर इन सब पुस्तकों का अनुवाद क्यों नहीं हो सका?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, मैं यह स्वीकार करता हूं कि जितनी तेजी से यह कार्य होना चाहिए था, उतनी तेजी से उसमें प्रगति नहीं हो पाई है। इसके कई कारण है, जिनमें से मुख्यत: यह है कि यह कार्य विद्वान प्रोफेसरों द्वारा कराया जाता है पर उन्हे समय की कमी रहती है, दस-दस बार पत्र लिखने पर भी वे उत्तर देने का कष्ट नहीं करते। इसके सिवा सबसे बड़ी कठिनाई रही है छपाई के सम्बन्ध में क्योंकि हमे कन्ट्रोलर आफ प्रिन्टिंग एंड स्टेशनरी की मार्फत ही पुस्तकें छपानी पड़ती है। उनके नियम इतने कडे है और गवर्नमेंट प्रेसेज मे इतना अधिक काम पहले से पडा हुआ है कि प्रगति बहुत धीमी हो रही है, लेकिन मैं माननीय सदस्य और सदन को आश्वासन देना चाहता हू कि अब इस कार्य में काफी तेजी आ रही है और अगले कुछ वर्षो में यह कार्य जल्दी समाप्त किया जायगा।

प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार : श्रीमन, यह जो पुस्तकें प्रकाशित हो रही है, उनका अन्तिम मतलब यह होना चाहिए कि विश्व-विद्यालयो मे स्वीकृत हो जाय और वहा पर पढानी लग जाये। लेकिन अभी तक आपने विश्वविद्यालयो को भेजी नही है और सम्भव है कि--जिसका मुझे बहुत भारी भय है--विश्वविद्यालयो के पास जब ये पुस्तकें जायंगी तो बिल्कुल अकारथ और निकम्मी समझी जायंगी। जो यह अनुवाद का काम है जिसमे आप शब्दश अक्षरश: और वाक्यश. अनुवाद करते है, उसका परिणाम यह होता है कि विद्यार्थियो के पल्ले कुछ नही पडता और पढ़ाने वाले के पल्ले कुछ नही पडता। क्या शिक्षा मंत्रालय के सामने कोई ऐसी योजना भी आई है कि पुस्तको का शब्दश:, अक्षरश: अनुवाद करने के स्थान पर, आप उपाध्यायो या विद्वत् वर्ग को 4-5 पुस्तको के नाम निर्दिष्ट करे और यह कहे कि वे स्वतन्त्र रूप से इस विषय पर पुस्तके लिखे--क्योंकि प्रत्येक भाषा का वर्णन करने का अपना तरीका होता है। अग्रेजी में जो वर्णन करने का तरीका है जरूरी नही है कि हिन्दी में उसी के समान हो। इसलिए जिस ढग से आप इन पुस्तको का अनुवाद करते है वह बेकार है एक पेज के ऊपर दस रुपया दे रहे ह .

श्री सभापति प्रोफेसर साहब आप सवाल करे।

प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार जब तक व्याख्यान न दिया जाय, मतलब ही नही प्रगट होता। अनुवाद के ऊपर 10 रुपया पेज दे रहे है और अन्त में जाकर लाखो रुपया खर्च हो जायगा। लाखो रुपया खर्च होकर जो पुस्तकें छपेंगी वे किसी के काम नही आएगी। इसलिए आप इस योजना पर क्यो नही विचार करते कि आप पुस्तको का मान निर्दिष्ट कर दें और उन पुस्तकों को देकर उपाध्याय वर्ग से कहे कि स्वतत्र पुस्तकें लिखें ?

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, माननीय सदस्य का प्रश्न इतना लम्बा है कि...

श्री एम० सी० चागला . बहुत छोटा है।

श्री भक्त दर्शन श्रीमन्, माननीय सदस्य महोदय का प्रश्न दो हिस्सो मे बाटा जा सकता है। जहा तक कि इन पुस्तको की उपयोगिता का प्रश्न है, हमें स्वयं इस बात की चिन्ता है कि जल्दी से जल्दी विश्वविद्यालयों में इनका उपयोग किया जाय। इस सम्बन्ध में माननीय सदस्य महसन होगे कि विश्वविद्यालय आटोनोमस बोडीज है, स्वायत्त-शासन प्राप्त सस्थायें है। हम उनसे प्रार्थना कर रहे है, उनका ध्यान इस ओर आकर्षित कर रहे है और हमे आशा है कि कम से कम हिन्दी-भाषी राज्यो के विश्वविद्यालय इन पुस्तको का उपयोग करेगे।

जहा तक स्वतन्त्र पुस्तकें लिखाने का प्रश्न है, माननीय सदस्य को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि स्वतन्त्र पुस्तके लिखाने का भी प्रयत्न किया जा रहा है। 78 पुस्तकें इस सम्बन्ध में छांटी गई है, जिनमें से 10 प्रकाशित हो चुकी है, 9 प्रेस में है और 59 के लिए तैयारी की जा रही है। हमारा स्वयं प्रयत्न

है कि स्वतत्र रूप से पुस्तके लिखी जाय ताकि प्रोफेसरो को भी सुविधा हो और विद्यार्थियो को भी सुविधा हो ।

प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालकार यह दुहरा काम क्या किया जा रहा है ? आप स्वतत्र पुस्तके भी लिखा रहे है और अनुवाद भी करा रहे है । शायद यही समझ कर लिखा रहे है कि अनुवाद आपके बेकार जा रहे है । अनुवादो का हाल इस वक्त यह है कि हिन्दी के अनुवादो को समझने के लिए अग्रेजी की पुस्तक को सामने रखना पडता है । जब तक आप अग्रेजी की पुस्तक को देखकर यह न जान ले कि हिन्दी वाली मे क्या लिखा है, तब तक आप हिन्दी की पुस्तक का भाव नही समझ सकते । ऐसी अवस्था है हिन्दी की पुस्तको की । उसका परिणाम यह होता है कि हिन्दी का नाम तो आप लेगे लेकिन यह चीज चलेगी नही । उस योजना को खत्म कीजिए और इस योजना को स्वतन्त्र पुस्तके लिखाने की योजना को शुरू कीजिए, तभी हिन्दी की उपयोगी पुस्तके तैयार हो सकती है । क्या सरकार इस दिशा मे सोचने को तैयार है ?

श्री भक्त दर्शन . श्रीमन्, मै माननीय सदस्य के इस कथन का प्रतिवाद करना चाहता हू कि ये पुस्तके बिलकुल बेकार सिद्ध हुई है । इन पुस्तको का योग्य विद्वानो की परामर्शदात्री समितियो के द्वारा चयन किया गया है और उन्ही के देखरेख में अनुवाद कराया गया है । इन पुस्तको की एक वर्ष तक नही अनेक वर्षो तक उपयोगिता रहेगी । और माननीय सदस्य का जो दृष्टिकोण है उससे मै सहमत हू और मत्रालय इस दिशा मे प्रयत्नशील है ।

SHRI M P BHARGAVA May I know from the hon Deputy Minister whether it is a fact that the slow progress of the Central Hindi Directorate besides all other reasons given by the hon Minister was due to inadequate staff functioning in the Directorate ?

SHRI BHAKT DARSHAN : No, Sir. The fact is that when the Standing Commission for Scientific and Technical Terminology was set up, it was provided in that first resolution by the Government that secretarial assistance would be provided by the Central Hindi Directorate This experiment was carried on for three years, but we found that it did not work well, and we have now separated the two There is no paucity of staff.

श्री भगवत नारायण भार्गव क्या उप-मत्री जी यह बताने की कृपा करेगे कि जिन पुस्तको का अनुवाद हो चुका है और जो छप चुकी है उनमे से विज्ञान की कितनी पुस्तके है ।

श्री भक्त दर्शन अधिकाश विज्ञान की है । अगर माननीय सदस्य जानना चाहे तो मै दो-चार के बारे मे बता सकता हू —

In the World of Isotopes
Semi-Conductors and Their Use
Introduction to Pure Solid Geometry
Mysterious Universe, etc etc

श्री प्रतुल चन्द्र मित्र सभापति महोदय, अभी मत्री जी ने बताया कि छपाई इसलिए नही हुई क्योकि सरकारी प्रेस मे काम बहुत ज्यादा है । कल ही बतलाया गया था कि सरकारी प्रेस मे ज्यादा काम होने की वजह से प्राइवेट प्रेस को काम दिया जाता है । तो ये किताबे छपाने के लिए क्या बाहर प्राइवेट प्रेस को नही दी जा सकती ?

श्री भक्त दर्शन श्रीमन्, मत्रालय ने इस सबध मे विचार किया है और हमने निश्चय किया है कि सारा छपाई का कार्य नेशनल बुक ट्रस्ट के द्वारा हो और इस सम्बन्ध मे बातचीत चल रही है ।

श्री ब्रजकिशोर प्रसाद सिह माननीय उपमत्री जी ने एक सवाल के जवाब में कहा कि ये किताबे जिनका हिन्दी मे अग्रेजी से अनुवाद किया जा रहा है उनका चयन बडी छानबीन के बाद किया गया है, बडे-बडे विद्वान इनका अनुवाद कर रहे है लेकिन

मै यह जानना चाहता हूं कि क्या इन किताबो को विद्यार्थियों से पढ़वा कर देखा गया है, उनकी प्रतिक्रिया जानी गई है या नही कि वह समझते भी है, या यह है कि विद्वानों ने कह दिया कि वह समझते है इसलिये एजुकेशन मंत्रालय यह समझता है कि वह समझेंगे ।

श्री भक्त दर्शन. श्रीमन्, मै समझता हूं कि माननीय सदस्य इससे सहमत होंगे कि हमें इतना निराशावादी नही होना चाहिये; हमारे अध्यापक भी योग्य है और हमारे विद्यार्थी भी चतुर है ।

श्री के० दामोदरन् : मै यह जानना चाहता हू कि सरकार अनुवादो पर ही क्यों इतना डिपेंड करती है । क्या इसका कारण यह है कि हिन्दी में काफी विद्वान लेखक नही है जो कि स्वतन्त्र रूप से किताबे लिख सकें ।

श्री भक्त दर्शन श्रीमन्, मै माननीय सदस्य को पहले तो बधाई और धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होने अहिन्दीभाषी होते हुए भी हिन्दी में प्रश्न पूछा है । उत्तर यह है कि बहुत से देशो को जो कि विकासोन्मुख है, प्रोग्रेसिव है, जिन्हें आगे बढ़ना है, उन्हें पहले अनुवाद पर ही निर्भर रहना पड़ेगा, पर साथ ही स्वतन्त्र पुस्तकों की भी हम व्यवस्था कर रहे है और आशा है कि कुछ दिनों मे यह कार्य पूरा हो जायगा ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चोरड़िया : अभी आपने बताया कि प्रगति धीमी रही है, हम प्रगति तेज करना चाहते है तो प्रगति को तेज करने के लिये क्या विशेष कदम उठाया गया जिससे हम और आप विश्वास कर सकें कि जल्दी से जल्दी अनुवाद हो सकेंगे ।

श्री भक्त दर्शन श्रीमन्, प्रत्येक नये कार्य में, जो भी महत्वपूर्ण और बुनियादी कार्य है उसमे शुरू मे दो तीन वर्ष लग जाते है । अब इसकी तैयारी पूरी हो चुकी है और पिछले दो वर्षो में इसमे काफी तेजी आई है---यह मै माननीय सदस्य को विश्वास दिलाता हूं ।

श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी : मै यह जानना चाहता हू कि अंग्रेजी के तकनीकी शब्दों का हिन्दी पर्याय, शब्द ढूढने का कार्य केवल अध्यापक, प्रशिक्षण कार्यकर्ता के ऊपर छोडा गया है या इस काम के लिये कोई कमेटी नियुक्त की गई है ।

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, माननीय सदस्य को ज्ञात होगा कि इस सम्बन्ध में एक उच्चाधिकार प्राप्त आयोग, (कमीशन) की नियुक्ति की गई है जिसमे बड़े-बड़े वैज्ञानिक लोग है और उसमें प्रत्येक भाषा के विद्वान शामिल किये गये है । इसके अतिरिक्त प्रत्येक विषय के लिये विशेषज्ञो की समितिया है, एक्सपर्ट एडवाइजरी कमेटीज है, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के विश्वविद्यालयो के प्रतिनिधि सम्मिलित होते है, उनके परामर्श के बाद और एक वार्षिक सेमिनार में पूरी तरह से विचार विनिमय करने के बाद इनको अंतिम स्वरूप दिया जाता है ।

SHRIMATI LALITHA (RAJAGOPALAN) : The Minister stated that the translation of these scientific books in the regional languages is left to the State Governments. But at the same time, to make it efficient and also to see that speedy work is done, will the Government at least give grants for this specific purpose and see that it is utilised properly for the speedy translation in these regional languages ?

SHRI BHAKT DARSHAN : Sir, the hon. lady Member will be glad to know that under our advice various State Governments and academic bodies have taken up translations in the regional languages also For example, in Marathi 14 books are under translation. In Punjabi one book has been published and nine are under translation. In Gujarati six books have been published, 11 are in the press and four are under translation. In Tamil 15 books are under translation; and in Kannada ten books are under translation.

श्री राम सहाय : क्या मैं मंत्री महोदय से यह जान सकूंगा कि जो पुस्तकों का ट्रांस्लेशन किया जा रहा है वह किस संस्था के द्वारा किस प्रकार से किया जा रहा है और जो आप मूल पुस्तके लिखवाने का प्रयत्न कर रहे हैं उनके लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिये आप क्या कोशिश कर रहे हैं ।

श्री भक्त दर्शन: श्रीमान, मैंने अभी निवेदन किया था कि हमारा एक आयोग है, एक कमीशन है, इसके लिये एक स्टैंडिंग कमीशन कार्य कर रहा है । उसके अध्यक्ष पिछले दिनों तक डा० कोठारी थे और आजकल डा० सेठी साहब हैं और उसके अन्दर दूसरे विद्वान भी शामिल हैं । यह अनुवाद जो कराया जाता है वह अधिकांशत: युनिवर्सिटियों के विद्वान प्रोफेसरों से कराया जाता है जो कि उस विषय के अधिकारी विद्वान हैं ।

WITHDRAWAL OF RECOGNITION TO MYSORE TEACHERS' TRAINING COURSE

*470. SHRI M. N. GOVINDAN NAIR: Will the Minister of EDUCATION be pleased to state :

(a) whether Government of Kerala have withdrawn their order of 1962 giving recognition to the Mysore Teachers' Training Course;

(b) the total number of students from that State now studying in the various Teachers' Training Schools in Mysore; and

(c) if reply to part (a) above be in the affirmative, how do Government intend to remove the difficulties caused to these trainees ?

THE MINISTER OF EDUCATION (SHRI M. C. CHAGLA) : (a) to (c) The information is being collected from the State Government and will be laid on the Table of the House.

मुथी शिविर के विस्थापितों की मांगें

*71. **श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया** :
श्री राम सिंह :
श्री एस० एस० मारिस्वामी :
श्री रामगोपाल गुप्ता :

क्या श्रम, सेवानियोजन और पुनर्वास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) जम्मू के निकट मुथी शिविर में रहने वाले छम्ब से आये विस्थापितों की मांगें क्या थीं, जिनके लिये 8 नवम्बर, 1965 को उन्होंने प्रदर्शन किया, जिसके फलस्वरूप उनके और पुलिस के बीच झगड़ा हो गया; और

(ख) क्या उस बारे में कोई जांच की गई है; और यदि हां, तो उसका क्या परिणाम निकला ?

†[DEMANDS OF DISPLACED PERSONS IN MUTHI CAMP

†*471. SHRI V. M. CHORDIA :‡
SHRI RAM GOPAL GUPTA :
SHRI S. S. MARISWAMY :
SHRI RAM SINGH :

Will the Minister of LABOUR, EMPLOYMENT AND REHABILITATION be pleased to state :

(a) what were the demands of the displaced persons from Chhamb staying in Muthi Camp near Jammu for which they staged a demonstration on the 8th November, 1965, resulting in a clash between them and the police; and

(b) whether any inquiry has been conducted thereon; and if so, with what result ?]

†[ ] English translation.

‡The question was actually asked on the floor of the House by Shri V. M. Chordia.